Diversities in Indian Society

5) भाषा की भिन्नतायें - भारतवर्ष में 1,652 मातृभाषाओं का प्रचलन है जिन्हें 826 भाषाओं के अन्तर्गत लाया जा सकता है। इन भाषाओं में 103 अभारतीय भाषाएं भी सम्मिलित हैं। हिन्दी भाषा बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। 13,34,35,360 व्यक्ति इस भाषा को बोलते हैं और इसे बोलने वाले विशेषकर उत्तर प्रदेश में रहते हैं। इसके बाद क्रमशः तेलगु और बंगला भाषाओं का स्थान है। इन भाषाओं को बोलने वालों की संख्या क्रमशः 3.77 करोड़ तथा 3.39 करोड़ है। इसके बाद भाषा को बोलने वालों की संख्या के आधार पर हम इस देश की विभिन्न भाषाओं को इस क्रम से प्रस्तुत कर सकते हैं - मराठी, तामिल, उर्दू, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, बिहारी, उड़ीया, राजस्थानी

पंजाबी
उड़ी, आसामी, संथाली, भीली, काश्मीरी
गोंडी तथा सिंधी। संस्कृत भाषा को बोलने
वालों की संख्या केवल 2544 है। इन भाषाओं
को 4 अलग-अलग भाषा परिवारों - आर्यन,
द्राविड़यन, ऑस्ट्रिक और चीनी तिब्बती
भाषा-परिवार से संबद्ध किया जा सकता है।
केवल भारतीय जनजातियों या आदिवासियों को
तीन भाषा-परिवारों में विभाजित किया जाता है

(अ). आग्नेय भाषा-परिवार जिसमें मध्य तथा पूर्वी
भारत की कोल या मुण्डा समूह की भाषाये या
बोलियाँ आती हैं। इस प्रकार की भाषाये बिहार,
उड़ीसा, बंगाल और असम में प्रचलित संथाली,
मुन्दारी, खड़िया, गारो तथा खासी जनजातियों
द्वारा बोली जाती है।

(ब) द्राविड़ भाषा-परिवार से संबंधित भाषाओं व
बोलियों को विशेषकर दक्षिणी भारत की
जनजातियाँ बोलती हैं।

स) चीनी तिब्बती भाषा परिवार से संबंधित
भाषाओं व बोलियों का व्यवहार हिमालय के
दक्षिणी ढालों पर रहने वाली पंजाब से
भूटान, उत्तर-पूर्वी बंगाल व असम तक
फैली हुई जनजातियाँ करती है। इसी प्रकार
विभिन्न भाषाये भारत के हर शहर, हर गाँव
में हर पल गूंजती रहती हैं। इसलिए यह कहा
जाता है कि भारत में प्रति 20 मील की दूरी पर
बोली बदल जाती है।

6) अन्य भिन्नताये - भारत के विभिन्न प्रदेशों

में भाषा, रहन-सहन, खान-पान, वेश भूषा, प्रथा, परंपरा, लोकगीत, लोकगाथा, विवाह प्रणाली, जीवन संस्कार, कला, संगीत तथा नृत्य में भी हमें अनेक रोचक व आकर्षक भेद देखने को मिलते है। इस देश में विवाह को धार्मिक संस्कार माना जाता है। और एक सामाजिक शिष्ट समझौता मात्र को। यहाँ यदि मुसलमान भाइ सिर ढककर खुली पर नमाज पढ़ते है, तो इसाई भाई सिर खोलकर जूते पहने ही प्रार्थना में सम्मिलित हो जाते है। इस देश में वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, कुरान, बाइबल और ग्रंथ साहब सबको माथ से लगाया जाता है। यहाँ दरबारी, कान्हड़ा, मियाँ, मल्हार, ध्रुपद, भजन, ख्याल, टप्पा, ठुमरी आदि विविध प्रकार की स्वर लहरी लहराती है। यहाँ भारत नाट्यम, कथाकली, कत्थक, मणिपुरी आदि विभिन्न प्रकार के नृत्य माने जाते है और इसी भारत भूमि में तुर्की, ईरानी, भारतीय व पाश्चात्य चित्रकला, मूर्तिकला व वास्तुकला के विविध रूप देखने को मिलते है। यही भारतीय संस्कृति की प्रकृति का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, यही भारतीय संस्कृति व समाज में पाई जाने वाली विभिन्नतायें है।